॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

पुनर्जन्म

लेखक
नितीन श्रीपाद जोशी

बुद्धपोर्णिमा ०७.०५.२०२०
मूल्य - रु २०

सुरेल सावन प्रकाशन
१९८०, सदाशिव पेठ,
पुणे ४११०३०
९९२२०८११२०

MAX LIFE INSURANCE
VEDANT MARGDARSHAK
PROFITMART
Stock Market Consultant
Stock Market Broker & PMS
life and all insurance
9922081120
www.vedantmarg.com

|| श्री गणेशायनम: ||

पुनर्जन्म के विषय में मैंने मेरे एक सहे ली से कहाँ तो वो तुरंत बोली की उसका पुनर्जन्म पर विश्वास नहीं हैं| तो मैंने कहाँ की बहुत लोग ऐसे होते हैं की उन का पुनर्जन्म पर बिलकुल विश्वास नहीं होता हैं| पर हमारी संस्कृति और परंपरा ये मानती हैं की पुनर्जन्म होता हैं| अनेक ग्रंथो में इसका साफ साफ उल्लेख हैं| यहाँ तक की अनेक सिनेमा में भी पुनर्जन्म दिखाया गया हैं| जिसे हम मानते हैं और विश्वास भी करते हैं| तो मैंने उसे कहाँ की चलो मैं तुम्हें ये विषय विस्तार रूप से समझता हूँ| अब उसे समझा ने के कारण ये एक छोटी सी किताब लिखने का मैंने फैसला किया| हिंदी में ये मेरी पहली किताब हैं और उसका श्रेय भी उसी सहे ली को जाता हैं क्योंकि उनका परिवार हिंदी भाषिक हैं| आज तक मैंने मराठी में जो किताबें लिखी हैं वो सब लोग पढ़ नहीं सकते| तो इस किताब के साथ मैंने हिंदी में लिखना शुरू किया हैं|

सबसे पहले एक बात जानना बहुत जरूरी हैं की कोई भी इंसान, इंसान के रूप में ही जन्म क्यों लेता हैं? हम कोई प्राणी क्यों नहीं हुए? मनुष्य जन्म जो की सबसे श्रेष्ठ माना जाता हैं उसका भी कोई कारण होगा| तो वो कारण ये हैं की किसी भी प्राणी का अंतिम उद्दिष्ट मोक्ष होता हैं| क्यों की हर एक प्राणी में जो आत्मा होता हैं वो उस परमात्मा का एक अंश होता हैं| वो परम तत्व जो एक था, अकेला था उसे खुद को अनेक रूप में देखने की इच्छा निर्माण हुई| एकोहं बहुस्यां इस स्फुरण से मैं एक हूँ और मैं अनेक रूप में प्रकट होना चाहता हूँ ऐसा विचार उसके मन में आया और उसने इस पूरे सृष्टि की और सब प्राणी, पन्छी तथा मनुष्य का निर्माण किया| अब ये सब प्राणी वापस उसी परमात्मा में हमेशा के लिए विलीन होना चाहते हैं| इसी को मोक्ष कहते हैं| अब मनुष्य ईश्वर का सबसे प्रिय प्राणी हैं| इसलिए ईश्वर ने मोक्ष का अधिकार सिर्फ मनुष्य को दिया हैं| बाकी कोई भी प्राणी मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता| यहाँ तक की देव, यक्ष, राक्षस किन्नर आदि कोई भी मोक्ष का अधिकारी नहीं होता हैं| उन्हें मोक्ष प्राप्त करने के लिए मनुष्य जन्म लेना पड़ता हैं| और एक हम हैं की हमें मनुष्य जन्म प्राप्त होने के बावजूद भी हम मोक्ष मुक्ति इसके बारे में सोचते तक नहीं हैं| दरसल ये संसार, ये हमारा जीवन दु:ख से भरा हैं| ये हमें सुख रूप लगता हैं पर नाशवंत होने के कारण दु:ख रूप हैं| इसलिए इससे मुक्ति पाना ही आवश्यक हैं, ऐसा हमारे वेद उपनिषद और ब्रह्मसूत्र में बताया गया हैं| और इन सब ग्रंथो का सार जिस महान ग्रंथ में आया हैं वो हैं श्रीमद्भगवद्गीता| ऐसे महान ग्रंथ में जो पुनर्जन्म के विषय में स्वयं भगवान श्रीकृष्णजी ने जो भी कुछ कहा हैं वो अवश्य सत्य ही होगा चाहें आप उस पर विश्वास करें या ना करें|

अब हम गीता में बताए गए उन श्लोक का अभ्यास करेंगे जिन में पुनर्जन्म और मोक्ष का रहस्य बताया हैं|

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ।।२-१३।।
जैसे जीवात्मा की इस देह में बालक पन, जवानी और वृद्धावस्था होती है, वैसे ही अन्य शरीर की प्राप्ति होती है, उस विषय में धीर पुरुष मोहित नहीं होता ।।२-१३।।

अर्थात मनुष्य जन्म लेता हैं, फिर बाल्यावस्था, जवानी और वृद्धावस्था से गुजरते हूए एक दिन मृत्यु को प्राप्त होता हैं पर उस की आत्मा को नया शरीर प्राप्त होता हैं। एस प्रकार उस का पुनर्जन्म होता हैं। पर जो धैर्यशाली पुरुष होते हैं वे इस विषय में मोहित नहीं होते हैं| वे अपना परमेश्वर प्राप्ति का कार्य अखंड चालू रखते हैं|

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ।।२-२२।।
जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर दूसरे नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्याग कर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होता है ।।२-२२।।

अर्थात जिस प्रकार हम पुराने फटे हूए जीर्ण वस्त्रों को फेक देते हैं और नये वस्त्र पहनते हैं, उसी प्रकार ये आत्मा पुराने शरीरों को अर्थात वो शरीर जिस की कार्य क्षमता बहूत कम हूई हैं, जो क्षीण हूआ हैं और जिस के कारण जो शरीर मोक्ष पाने के लिये या आत्मा को मुक्त करने के लिये जिस कर्म का प्रयास करने की आवश्यकता होती हैं वो करने में असमर्थ होता हैं, उस शरीर को त्याग देता हैं और नये शरीर के रूप में फिर से जन्म लेता हैं ताकी वो मोक्ष पाने के मार्ग पर चलने का फिर से प्रयास कर सकें सके। ये तभी संभव हैं जब हमारा पुनर्जन्म होता हैं।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ।।२-२७।।
क्योंकि इस मान्यता के अनुसार जन्मे हूए की मृत्यु निश्चित है और मरे हूए का जन्म निश्चित है। इससे भी इस बिना उपाय वाले विषय में तू शोक करने के योग्य नहीं है।।२-२७।।

इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्णजी कहते हैं की हर एक प्राणी को जन्म के बाद मृत्यु आती हैं और मृत्यु के बाद पुनर्जन्म| ये सिलसिला तब तक चलता रहता हैं जब तक उस प्राणी को मोक्ष नहीं मिलता| अब किसी प्राणी को तो मोक्ष मिलना संभव नहीं हैं| उसे जन्म पर जन्म ले कर पहले मनुष्य जन्म प्राप्त करना पड़ता हैं| फिर मनुष्य जन्म में वो मुमुक्षुत्व प्राप्त कर के अर्थात मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा को प्राप्त कर लेता हैं| फिर शास्त्र प्रचिती, गुरु प्रचिती और आत्मप्रचीती की अवस्था को प्राप्त कर के मोक्ष पद को प्राप्त होता हैं| आदि शंकराचार्य जी ने तो मोक्ष संपादन करने के सूत्र उन के विवेकचूड़ामणि इस महान ग्रन्थ में बताया हैं| उस में से एक सूत्र ये हैं की

दुर्लभं त्रयमेवैतद् देवानुग्रहहेतुकम् |
मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं महापुरुषसंश्रय ||

अर्थात इस संसार में तीन चीजें अत्यंत दुर्लभ होती हैं और वें सिर्फ ईश्वर के कृपा से ही प्राप्त होती हैं |

१. मनुष्य जन्म प्राप्त होना की जिस में और सिर्फ जिस में हम मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं| इसीलिए इस मनुष्य जन्म को दुर्लभ मन जाता हैं|

२. मुमुक्षत्व जागृत होना| अब ऐसे मनुष्य जन्म में लगभग कोई भी व्यक्ति मोक्ष क्या हैं ये जानने की कोशिश नहीं करता हैं या उसे प्राप्त करने की इच्छा रखता हैं| इस का प्रमुख कारण ये हैं की वो इस संसार और उस में प्राप्त होनेवाले भौतिक सुखों को ही सुख मानता हैं| अपने इन्द्रियों का उन के विषयों के साथ संयोग होना और उस से निर्माण होनेवाले जो भोग हैं उसी को वो सुख मानता हैं| पर ये भोग पूर्णतः नाशवंत होते हैं| जिन्हे आदि और अंत होता हैं| सिर्फ परमात्मा परमेश्वर अनादि अनंत होता हैं| ऐसे सद्चिदानंद परमेश्वर प्राप्ती में जो आनंद हैं उसे जानने की चाह और उसी मार्ग पर सदैव चलने की इच्छा निर्माण होना इसी का नाम मुमुक्षुत्व हैं जो की मनुष्य जन्म प्राप्ती से भी अधिक दुर्लभ होता हैं|

३. महा पुरुष का सत्संग प्राप्त होना| अब अगर किसी मनुष्य का मुमुक्षुत्व जागृत हो गया तो उसे अनेक बाते जानने की इच्छा होती हैं जैसे की ईश्वर क्या हैं? ब्रह्म क्या हैं? अध्यात्म, कर्म, अधिभूत, अधिदैव, अधियज्ञ और जीवात्मा क्या हैं? इस के लिए वो हमारे शास्त्रों में जो दश ग्रंथ बताये गए हैं उन का अभ्यास करता हैं और ये सब सवालों के जवाब खोजने का प्रयास करता हैं| इन दश ग्रंथों को प्रस्थानत्रयी कहा जाता हैं| वे इस प्रकार हैं

प्रस्थानत्रयी

वैदिक प्रस्थानत्रयी

१. उपनिषद २. ब्रह्मसूत्र ३. श्रीमद्भगवद्गीता

पौराणिक प्रस्थानत्रयी

१. रामायण २. महाभारत ३. वेदमहर्षि व्यास द्वारा लिखी गयी भागवदपुराण

संतों की प्रस्थानत्रयी

१. संत ज्ञानेश्वर महाराजजी की ज्ञानेश्वरी २. संत तुकाराम महाराजजी की गाथा ३. संत एकनाथ महाराजजी का भागवत जो की वेदमहर्षी व्यासजी के भागवत के एकादश स्कंध पार लिखा गया हैं ४. संत रामदास स्वामीजी का दासबोध

अब इन ग्रंथों का पुन: पुनः अभ्यास, मनन और चिंतन करने के बावजूद भी उसे परमेश्वर का ठीक तरह से ग्यान नहीं होता हैं| इसलिए वो गुरु की खोज में निकालता हैं और ऐसे गुरु की प्राप्ती और उस का सहवास ये तीसरी दुर्लभ चीज हैं जो की करोडो में किसी एक को ही नसीब होता हैं|

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ।।४-१।।
मैंने इस अविनाशी योग को सूर्य से कहा था, सूर्य ने अपने पुत्र वैवस्वत मनु से कहा और मनु ने अपने पुत्र राजा इक्ष्वाकु से कहा ।।४-१।।

इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्णजी कहते हैं की ये योग मैंने सब से पहले सूर्य देव से कहा था | ये सुनकर अर्जुन के मन में शंका उत्पन्न होती हैं की हे भगवान श्रीकृष्णजी आप का जन्म तो अभी के काल खंड में हूआ हैं और सूर्य देव तो अति प्राचीन हैं| | तो ये योग अपने सूर्य देव को बताया ये कैसे मुमकिन हैं? फिर भगवान श्रीकृष्णजी बोले

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन ।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप ।।४-५।।
हे परन्तप अर्जुन ! मेरे और तेरे बहुत-से जन्म हो चुके हैं। उन सबको तू नहीं जानता, किंतु मैं जानता हूँ ।।४-५।।

ये बहूत ही महत्वपूर्ण श्लोक हैं| इस में भगवान श्रीकृष्णजी कहते हैं की हे अर्जुन, तुम्हारे और मेरे आज तक बहूत जन्म हो चुके हैं जिन्हे तुम भूल गए हो मगर मुझे सब याद हैं| हमारे बारे में भी ऐसा ही होता हैं| हम जन्म पर जन्म लेते हैं पर हमें हमारा पिछला जन्म याद नहीं होता हैं| और हम उसे याद करना भी नहीं चाहते हैं| क्यों की हम मानते हैं के मेरा जो भी कुछ हैं वो इसी जन्म में हैं| मैं जन्म के पूर्व क्या था और मेरे मृत्यु के बाद मेरा क्या होगा इस से मुझे कोई लेना देना नहीं| इतना ही नहीं बल्कि इस से आगे जा कर हम ये कहते हैं की पुनर्जन्म होता ही नहीं हैं| ये सब झूठ हैं| धर्म अर्थ काम मोक्ष ये चार पुरुषार्थ हमारे शास्त्र में बताया हैं| पर हम इन में से सिर्फ अर्थ और काम (इच्छा, वासना) इसी को मानते हैं और इसी की पूर्ति के लिए पूरी जिंदगी बिता देते हैं| दरसल धर्म अनुसार अर्थ की प्राप्ति करें और अपनी जो किमान आवश्यकता हैं उतना ही परिग्रह (वस्तु का संग्रह) करे| बाकि सारा समय परमेश्वर प्राप्ति के मार्ग पर चलने के लिए उपयोग करें| इस प्रकार इस जन्म में मोक्ष प्राप्ति नहीं हूई तो अगले जन्म में फिर से प्रयास करें| इस प्रकार पुनर्जन्म पर विश्वास रख कर जन्म जन्मों की पुण्याई के बाद मोक्ष पद प्राप्त कर के ईश्वर को प्राप्त हो कर सच्चा सुख, आनंद और समाधान पाए|

गीता के छटे अध्याय में अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्णजी से पूछा की योग मार्ग पर चलने वाले और भगवत्प्राप्ति का प्रयास करने वाले व्यक्ति को मृत्यु प्राप्त होती हैं तो वो किस गति को प्राप्त होता हैं? तब भगवान श्रीकृष्णजी ने कहा

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते ।
न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति ।।६-४०।।
हे पार्थ ! उस पुरुष का न तो इस लोक में नाश होता है और न पर लोक में ही। क्योंकि हे प्यारे ! आत्मोद्वार के लिये अर्थात् भगवत्प्राप्ति के लिये कर्म करने वाला कोई भी मनुष्य दुर्गति को प्राप्त नहीं होता ।।६-४०।।

भगवत्प्राप्ति के लिए प्रयत्न करनेवाला कभी भी दुर्गति को प्राप्त नहीं होता| वो पुन: जन्म लेता हैं और आत्मोद्धार के लिए प्रयत्न करता हैं| उस का इस लोक में या पर लोक में कभी नाश नहीं होता| उस का क्या होता हैं ये आगे बताया गया हैं|

प्राप्य पुण्यकृतां लोका-नुषित्वा शाश्वती: समा: ।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ।।६-४१।।
योगभ्रष्ट पुरुष पुण्यवानों के लोगों को अर्थात् स्वर्गादि उत्तम लोगों को प्राप्त होकर, उनमें बहूत वर्षों तक निवास करके फिर शुद्ध आचरण वाले श्रीमान् पुरुषों के घर में जन्म लेता है ।।६- ४१।।

ये योगभ्रष्ट पुरुष जो योगाचरण करते हूए मृत्यु को प्राप्त होता हैं वो स्वर्ग को प्राप्त होता हैं| वहाँ बहूत वर्षों तक निवास कर के फिर से शुद्ध आचरण करने वाले श्रीमान पुरुषों के घर में जन्म लेता है| इस बात पर गौर करे| ये तभी संभव हैं जब की उस पुरुष का आत्मा किसी दूसरे शरीर में प्रवेश कर के पुनर्जन्म ले| ताकि वो अपने पिछले जन्म में जो मोक्ष संपादन करने का कार्य अधूरा रह गया था उसे पूरा कर सके|

अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम् ।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम् ।।६-४२।।
अथवा वैराग्यवान् पुरुष उन लोगों में न जाकर ज्ञानवान् योगियों के ही कुल में जन्म लेता हैं। परन्तु इस प्रकार का जो यह जन्म है सो संसार में नि:संदेह अत्यंत दुर्लभ है ।।६-४२।।

इन में जो योगभ्रष्ट पुरुष वैराग्यवान होता हैं वो ज्ञानीजनों के कुल में जन्म लेता हैं| इस प्रकार का जन्म अत्यंत दुर्लभ होता हैं| जितने संत, आचार्य, मुनि हैं उन्हें ऐसा जन्म प्राप्त हूआ हैं| और शायद उस जन्म में उन्हें मुक्ति मिलती हैं| वे हमेशा के लिए उस परमतत्व में विलीन हो जाते हैं|

तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहकिम् ।
यतते च ततो भूय: संसिद्धौ कुरुनन्दन ।।६-४३।।
वहाँ उस पहले शरीर में संग्रह किये हूए बुद्धि संयोग को अर्थात् समबुद्धि रूप योग के संस्कारों को अनायास ही प्राप्त हो जाता है और हे कुरुनन्दन! उसके प्रभाव से वह फिर परमात्मा की प्राप्ति रूप सिद्धि के लिये पहले से भी बढ़कर प्रयत्न करता है ।।६-४३।।

इस श्लोक में जो आश्वासन भगवान श्रीकृष्णजी ने दिया हैं वो बहूत महत्वपूर्ण हैं | भगवान श्रीकृष्णजी कहते हैं, हे अजुन ऐसा पुनर्जन्म लिया हूआ वो योगी अपने पूर्व देह में भगवत्प्राप्ति के लिए जिन जिन साधनों का प्रयोग करता था उन्हें फिर से प्राप्त कर लेता हैं| तथा पिछले जन्म के समत्वबुद्धिरूप संस्कारों को वो विना सायास प्राप्त होता हैं| इस का अर्थ ये हूआ की इस जन्म में हम मोक्ष प्राप्ति के लिए जो प्रयास करेंगे वो व्यर्थ नहीं जायेगा| अगले जन्म में हम वहीं से सुरवात करेंगे जहाँ हम इस जन्म में रुके थे| इसलिए मोक्ष मिले या न मिले हमें प्रयास करते रहना चाहिए| एक न एक दिन मुक्ति अवश्य मिलेगी|

पूर्वाभ्यासेन तेनैव हियते ह्यवशोऽपि सः ।
जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते ।।६-४४।।
वह श्रीमानों के घर में जन्म लेने वाला योगभ्रष्ट पराधीन हूआ भी उस पहले के अभ्यास से ही नि:संदेह भगवान की ओर आकर्षित किया जाता है, तथा समबुद्धि रूप योग का जिज्ञासु भी वेद में कहे हूए सकाम कर्मों के फल को उल्लंघन कर जाता है ।।६-४४।।

ये श्लोक में भी एक बहूत अच्छी बात कही हैं| भगवान श्रीकृष्णजी कहते हैं की भले इस जन्म में वो पुरुष विषय और उन के भोग इन के स्वाधीन हो सकता हैं| पर उस ने जो पूर्व जन्म में अभ्यास किया होता हैं उस अभ्यास के कारण वो पुनः ईश्वर की ओर खींचा चला जाता हैं और उस का अभ्यास पुनः शुरू करता हैं|

मेरे जीवन में शायद ऐसा ही कुछ हूआ हैं| मैंने १९९७ में श्रीमद्भगवतगीता का अभ्यास आरम्भ किया जब मैं ३३ साल का था| तब तक मेरा गीता से इतना कुछ सम्बन्ध नहीं था| मैं मेरे संसार और ग्रहगृहस्थी में मग्न था| पर जिस दिन मेरे गुरु विद्यावाचस्पति श्री शंकर वासुदेव अभ्यंकरजी का पहला प्रवचन मैंने सुना जो की गीता का पहला अध्याय था, मुझे ऐसा लगा की इस गीता का मेरे जीवन में अभाव था जिसे के कारण मैं अनेक दू:खों का सामना कर रहा था| फिर मैंने जैसा जैसा गीता का अभ्यास शुरू किया वैसा वैसा मुझे लगने लगा की अरे ये तो मैं पहले से ही जानता हूँ| गीता में जब मैंने पुनर्जन्म के बारे में पढ़ा तो मुझे ये अहसास हूआ की मैंने गीता का अभ्यास पिछले जन्म में किया था| वही से मैंने इस जन्म में आगे पढ़ना शुरू किया हैं| २००२ में मैंने गीता पर मेरा पहला प्रवचन किया| तब तो मेरा सिर्फ ५ साल का अभ्यास था| फिर भी ६० - ७० लोगों के सामने मैं एक घंटा बिना किसी रूकावट के साथ बोल सका| इस से ज्यादा मैं और क्या प्रमाण दूँ?

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिष: ।
अनेकजन्मसंसिद्ध स्ततो याति परां गतिम् ।।६-४५।।
परन्तु प्रयत्न पूर्वक अभ्यास करने वाले योगी तो पिछले अनेक जन्मों के संस्कार बल से इसी जन्म में सिद्ध होकर संपूर्ण पापों से रहित हो फिर तत्काल ही परम गति को प्राप्त हो जाता है ।।६-४५।।

यहाँ भगवान श्रीकृष्णजी कहते हैं की जो योगी पिछले अनेक जन्म के जो संस्कार होते हैं उन के आधार पर इसी जन्म में सिद्धि प्राप्त कर लेता हैं और सब पापों से रहित हो कर परम गति को प्राप्त हो जाता हैं अर्थात जन्म मृत्यु के इस दु:ख रूप संसार से मुक्ति पाता हैं वो इस प्रकार मोक्षपद प्राप्त कर के हमेशा के लिए ईश्वर के पास चला जाता हैं| यही सत्य हैं और यही अंतिम सुख हैं| इसलिए आप सब लोग भी इस मोक्ष को समझ ली जिये और उसे प्राप्त करने का प्रयास शुरू की जिये|

दरसल मैं मेरी उस सहेली को शतशः प्रणाम कर के उसे धन्यवाद कहना चाहता हूँ| क्यों की उस की वजह से मैंने ये किताब लिखी और उस के कारण मुझे खुद को भी मेरे अंतिम लक्ष का स्मरण हूआ जिसे शायद मैं मेरे उम्र के ५५ बरस की आयु में थोड़ा बहूत भूल गया था| अब मैंने फिर से जोरों में प्रयास आरम्भ करने का निश्चय किया हैं|

आप को एक मजे की बात बताता हूँ | आप अगर कभी पचगनी जो की महाबलेश्वर के पहले आता हैं, वहाँ अगर गए हो तो वहाँ पे पंडित लोग रास्ते में आप का भविष्य बताते हैं| ये लोग ज्यादा तर आप का मुख देख कर आप को बहूत कुछ बताते हैं| ऐसे ही एक पंडित ने मेरा माथा देख कर कहा की आप का ये जन्म बहूत जन्मों के पुण्य कर्म का फल हैं| आप का ये जन्म विशेष कार्य के लिए हूआ हैं और इस जन्म में आप को मोक्ष मिलने वाला हैं| इस जन्म के बाद आप मुक्त हो जाओगे| मैंने बोला भैय्या आप ये क्या बोल रहे हो? इतनी मेरी पात्रता नहीं हैं की मुझे मोक्ष की प्राप्ति हो| तो वो बोले की आप की उम्र क्या हैं? तो मैं बोला ४५ वर्ष| तो वो बोले शायद अभी नहीं होगी पर जब आप के उर्वरित जीवन में पुण्य कर्म कर के मोक्ष के पात्र बन जाओगे| मुझे ये सुनकर बड़ा आश्चर्य हूआ और बहूत आनंद भी हूआ| क्यों की जिस मोक्ष को मैं गए बारा साल गीता के अभ्यास द्वारा जानने की और समझने की कोशिश कर रहा था वही उस पंडित ने मेरी झोली में दाल दिया| अब ये भविष्यवाणी सच होगी या नहीं ये तो मैं नहीं जानता पर मोक्ष के लिए कर्म करना ये मेरा कर्तव्य हैं और वो मैं अवश्य निभाउंगा|

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ।।७-१४।।
क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है; परंतु जो पुरुष केवल मुझ को ही निरंतर भजते हैं, वे इस माया का उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसार से तर जाते हैं ।।७-१४।।

इस श्लोक में अगर आप पुनर्जन्म नहीं चाहते हैं तो क्या करना होगा ये भगवान श्रीकृष्णजी बताते हैं| वो कहते हैं की उन की त्रिगुणात्मक माया अर्थात प्रकृति को पार करना बहुत ही मुश्किल हैं| ये तीन गुण अर्थात सत्व, रज तथा तम इन्ही के भीतर हमारा पूरा जीवन व्यतीत होता हैं| हम ऐसा मानते हैं की ये गुणमयी माया ही सब कुछ हैं| यही सुख और आनंद हैं| इसे पाने के लिए हम हमारी पूरी जिंदगी व्यर्थ गवा देते हैं और एक दिन मृत्यु को प्राप्त होते हैं| इसलिए हमें ये समझना चाहिए की परमेश्वर इस के परे हैं| उसे अगर पाना हैं तो इस त्रिगुणात्मक मायारुपी आवरण को छेद कर हमें उस ईश्वर को निरंतर भज कर उस के पास जाना हैं| इस प्रकार अगर मोक्ष पाना हैं तो इस संसार रूपी सागर को पार करना ही हैं| अब इस का मतलब ये नहीं हैं की हम त्रिगुणात्मक विषय पूर्ण: त्याग कर दे| जितना अत्यंत आवश्यक हैं उतना विषयों का सेवन तो जब तक ये नश्वर शरीर की यात्रा चल रही हैं तब तक करना ही पड़ेगा| पर जो अतिरिक्त और अनावश्यक सेवन करते हैं वे ईश्वर को कभी जान नहीं पाएंगे|

अनन्यचेता: सततं यो मां स्मरति नित्यश: ।
तस्याहं सुलभ: पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिन: ।।८-१४।।
हे अर्जुन ! जो पुरुष मुझ में अनन्यचित्त होकर सदा ही निरंतर मुझ पुरुषोत्तम को स्मरण करता है, उस नित्य निरंतर मुझ में युक्त हुए योगी के लिये मैं सुलभ हूँ, अर्थात् उसे सहज ही प्राप्त हो जाता हूँ ।।८-१४।।

इस दो श्लोक में भगवान श्रीकृष्णजी ने पुनर्जन्म किसे प्राप्त नहीं होता ये बताया हैं| वे कहते हैं जो पुरुष ईश्वर में अनन्यचित्त होकर सदा और निरंतर उसे स्मरण करता हैं, उस निरंतर ईश्वर में युक्त हुए योगी के लिए ईश्वर सुलभ हो जाता हैं अर्थात आसानी से प्राप्त होता हैं| अब इस श्लोक में दो शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण हैं| अनन्यचित्त और निरंतर| अनन्य का मतलब हैं जो खुद को ईश्वर से अन्य अर्थात अलग नहीं मानता वो हैं अनन्य| न अन्य इति अनन्य| हमारी ये सब से बड़ी समस्या हैं| हम ईश्वर को अपने से अलग मानते हैं और फिर उस की पूजा करते हैं| पर जब किसी भी भक्त को ऐसा लगता हैं की मैं और ईश्वर एक हैं तो वो अनन्य भक्त हो जाता हैं| दूसरी सब से अहम बात ये बताई गयी हैं की ईश्वर की भक्ति निरंतर यानि की सदा सर्वकाल सदैव अखंड न रुके बिना होनी चाहिए| आजा कल की भाषा में बोले तो 24/7 होनी

चाहिए| हम लोग अपने बाकी जीवन में इतने व्यस्त होते हैं की भक्ति के लिए ज्यादा समय नहीं दे पाते तो निरन्तन भक्ति कहाँ से कर पाएंगे? भक्ति के ९ प्रकार इस श्लोक में बताया गए हैं| हम सबने ये देखना हैं की हम इस में से क्या क्या करते हैं| जब हम सब करने लगेंगे तो २४ घंटे कम पड़ेगें|

श्रवणं कीर्तनं विष्णो: स्मरणं पादसेवनम् |अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यामात्मनिवेदनम् ||

श्रवण, कीर्तन, नाम स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य, आत्मनिवेदन ये नौ प्रकार की भक्ति बताई गया हैं| इन सब को हम जब वक्त मिले तब साकार कर सकते हैं| सबसे अहम् बात ये हैं की नाम स्मरण को छोड़ के अन्य सब भक्ति में आप को किसी साधन की या किसी अन्य व्यक्ति की आवश्यकता होती हैं| पर नाम स्मरण ये एकमात्र ऐसी भक्ति हैं जिसे न ही कोई साधन की आवश्यकता हैं न ही कोई व्यक्ति की| नाम स्मरण करने के लिए न ही आप को समय देखना पड़ता हैं न ही कोई जगह देखनी पड़ती हैं| जळी स्थळी काष्ठी पाषाणी कही भी ईश्वर का स्मरण कर सकते हैं| जो ऊपर वाले श्लोक में निरंतर लिखा हैं वो नाम स्मरण के बारे में कर सकते हैं| भगवान श्रीकृष्णजी ने गीता के दशवे अध्याय में अपनी विभूति बताई हैं मतलब परमेश्वर को हम कहाँ कहाँ देख सकते हैं ऐसे इस संसार के स्थान बताया गया हैं| इन में एक विभूति में उन्होंने कहा हैं की यज्ञानाम जपयज्ञोस्मि अर्थात सब यज्ञ में मैं जप यज्ञ हूँ अर्थात मेरा नाम स्मरण सबसे बड़ा यज्ञ हैं| समर्थ श्री रामदासस्वामीजी ने उन के ग्रन्थराज दासबोध में इस नव विधा भक्ति पर नौ समास लिखे हैं वो ज़रूर पढ़िए| इस प्रकार आप ईश्वर को सहज प्राप्त कर सकते हैं |

मामुपेत्य पुनर्जन्म दु:खालयमशाश्वतम् ।
नाप्नुवन्ति महात्मान: संसिद्धिं परमां गता: ।।८-१५।।
परम सिद्धि को प्राप्त महात्मा जन मुझ को प्राप्त होकर दुखों के घर एवं क्षणभंगुर पुनर्जन्म को नहीं प्राप्त होते ।।८-१५।।

इस प्रकार परम सिद्धि को प्राप्त हुआ महाजन ईश्वर को प्राप्त हो कर इस दु:ख:रूपी संसार को जो की क्षणभंगुर हैं उसे दोबारा प्राप्त नहीं होता| वो ईश्वर के पास ही रहता हैं| अर्थात मोक्ष का अधिकारी बन जाता हैं और जन्म मृत्यु एवं पुनर्जन्म के चक्र से छुटकारा पाता हैं| अभी परम सिद्धता ये अपने अंतर आत्मा में ही सब कुछ पाना और बहार के विषयों को भीतर मत आने देना यही सिद्ध भाव हैं| हमारी आतंरिक रिक्तता किसी भी बाहरी विषयों से नहीं भरी जा सकती| अगर हम इस रिक्तता या शून्य में ही जीने और जगाने का साहस करते हैं तो वो शून्य ही हमारे लिए पूर्ण बन जाता हैं और ये रिक्तता ही परम मुक्ति सिद्ध होती हैं| वो शून्य ही सत्ता हैं

और उस सत्ता में ही परमात्मा हैं| और इस परमात्मा को पाना ही परम सिद्धता हैं| ऐसे सिद्धी को प्राप्त होने वाला मनुष्य महात्मा कहलाता हैं|

प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुन: पुन: ।
भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात् ।।९-८।।
अपनी प्रकृति को अंगीकार करके स्वभाव के बल से परतन्त्र हुए इस संपूर्ण भूत समुदाय को बार-बार उनके कर्मों के अनुसार रचता हूँ ।।९-८।।

भगवान श्रीकृष्णजी कहते हैं की इस संसार में हर एक प्राणी मेरी योगमाया में संपूर्णतः वश हैं। ये सब प्राणी अपने त्रीगुणात्मक स्वभाव के कारण मेरी प्रकृती में समाविष्ट होते हैं। इस संपूर्ण प्राणीयो के समुदाय को मैं ऊन के भिन्न भिन्न कार्मो के अनुसार उन्हे बार बार निर्माण करता हूँ अर्थात उन्हे बार बार जन्म लेना पड़ता हैं। अब इस प्रनियो के समुदाय में मनुष्य तो सब से महत्वपूर्ण प्राणी हैं। तो वो कैसे छूट सकता हैं? इस का साफ मतलब यह हैं की मनुष्य को और अन्य सभी प्रणियो को पुनर्जन्म लेना पड़ता हैं।

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति।
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते ।।९-२१।।
वे उस विशाल स्वर्ग लोक को भोग कर पुण्य क्षीण होने पर मृत्यु लोक को प्राप्त होते हैं; इस प्रकार स्वर्ग के साधन रूप तीनों वेदों में कहे हुए सकाम कर्म का आश्रय लेने वाले और भोगों की कामना वाले पुरुष बार-बार आवागमन को प्राप्त होते हैं, अर्थात् पुण्य के प्रभाव से स्वर्ग में जाते हैं और पुण्य क्षीण होने पर मृत्यु लोक में आते हैं ।।९-२१।।

हमारे संस्कृति में ऐसा माना जाता हैं की जब हम अच्छा काम कर के पुण्य कमाते हैं तो अपने मृत्यु के पश्चात हम स्वर्ग में जाते हैं| पर ये भी कोई अंतिम अवस्था नहीं हैं क्यों की जो पुण्य हम कमाते हैं वो स्वर्ग में खर्च हो जाता हैं और वो क्षीण हो जाता हैं| इस के बाद हमें पुनर्जन्म लेना पड़ता हैं| इस स्वर्ग प्राप्ति का मार्ग तीनों वेदों में बताया गया हैं| पर वो सकाम कर्म का आश्रय लेता हैं| उस में उपभोग की कामना होती हैं| ऐसे लोग बार बार जन्म लेते हैं और मृत्यु को प्राप्त होता हैं|

अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च ।
न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्यवन्ति ते ।।९-२४।।
क्योंकि सम्पूर्ण यज्ञों का भोक्ता और स्वामी भी मैं ही हूँ; परंतु वे मुझ परमेश्वर को तत्त्व से नहीं जानते, इसी से गिरते हैं अर्थात् पुनर्जन्म को प्राप्त करते हैं ।।९-२४।।

भगवान श्रीकृष्णजी कहते हैं की सब यज्ञ का भोक्ता और स्वामी मैं हूँ| इस का मतलब हम यज्ञ में जो भी आहूति देते हैं उन्हें भगवान श्रीकृष्णजी ग्रहण करते हैं| हम कर्मरूपी यज्ञ करें तो उस का फल भी वही ग्रहण करते हैं| पर बहुत सारे

लोग इस बात को जानते नहीं हैं या जानकर भी मानते नहीं हैं, उन्हें भगवान श्रीकृष्णजी पुनर्जन्म को प्राप्त करते हैं| इस का अर्थ ये हैं की अगर आप जन्म मृत्यु के चक्र से बाहर निकलना चाहते हो तो आप को ईश्वर को जानना बहूत जरूरी हैं| इस के लिए आप को ज्ञान संपादन करना आवश्यक हैं| ज्ञान का मतलब जो हमें ईश्वर की पहचान कराता हैं, जो हमें ईश्वर तक पहूंचने का मार्ग बताता हैं, जो हमें मोक्ष का मार्ग दिखता हैं, जो हमें सुखी, समाधान एवं शांत जीवन की प्राप्ति कराता हैं| इस के अतिरिक्त हम जो भी पाठशाला या महाविद्यालय में हम सिखाते हैं वो या तो विज्ञान होता हैं या माहिती स्वरूप होता हैं| और ऐसी बहूत सारी पदवी हासिल करने के बाद हमें लगता हैं के हम ज्ञानी हो गए हैं| पर नहीं, उस ज्ञान से आप इस संसार में सुखी होने का प्रयास कर सकते हैं पर इस संसार से परे जो ईश्वर का विश्व हैं वहाँ तक नहीं पहूँच सकते|

इस प्रकार से मैंने ये गीता की परिभाषा में पुनर्जन्म का विषय आप लोगों को समझाने की कोशिश की हैं| मुझे उम्मीद हैं के आप लोग इसे समझ पाएंगे और इस पर विश्वास रखेंगे| इस के अनुसार आचरण कर के आप लोगों को ईश्वर तक पहूंचने का मार्ग मिले और आप को निरंतर सुख, समाधान, और शांति प्राप्त हो यही उस परमेश्वर के चरणों में प्रार्थना| मेरे सहेली का फिर एक बार धन्यवाद|

|| ॐ तत्सत् ब्रह्मार्प्रणमस्तु ||